निजानन्दीय संस्कार विधि

प्रकाशक
श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

निजानन्दीय संस्कार विधि

संयोजक :
'धर्मवीर' 'जागनी रत्न' श्री जगदीश चन्द्र

संरक्षक :
श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी (उ० प्र०)
एवम्
श्री निजानन्द आश्रम बड़ोदरा (गुजरात)

प्रकाशक
श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

Nijanand App

निजानन्दीय संस्कार विधि

संयोजक :

'धर्मवीर' 'जागनी रत्न' श्री जगदीश चन्द्र

संरक्षक :

श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी (उ० प्र०)

एवम्

श्री निजानन्द आश्रम बड़ोदरा (गुजरात)

प्रकाशक

श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

Nijanand App

भूमिका

प्राणों के आधार आत्म सम्बन्धी श्री सुन्दरसाथ जी! श्री निजानन्द सम्प्रदाय के मूल सिद्धान्तों के अनुसार एकमात्र पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत ही उपास्य हैं। उनकी ही प्रेम लक्षणा भक्ति से यह मानव जीवन सार्थक हो पायेगा। इस बात को ध्यान में रखकर यह संस्कार विधि तैयार की गयी है, ताकि सुन्दरसाथ अपने सभी संस्कारों में केवल युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी का ही पूजन करें।

अन्य देवताओं की नहीं। आशा है, यह पद्धति सुन्दरसाथ में लोकप्रिय होगी।

इन्हीं भावनाओं के साथ

आपका

श्री जगदीश चन्द्र

संरक्षक-श्री निजानन्द आश्रम

रतनपुरी (उ० प्र०)

एवम्

श्री निजानन्द आश्रम

बड़ोदरा (गुजरात)

श्री निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति

सतगुरु ब्रह्मानन्द है, सूत्र अक्षर रूप।
सिखा सदा तिन से परे, चेतन चिद जो अनूप।।१।।

सेवन है पुरुषोत्तम, गोत्र चिदानन्द जान।
परम किशारी इष्ट है, पतिव्रता साधन मान।।२।।

श्री युगल किशारे को जाप, है मन्त्र तारतम सोय।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोय।।३।।

अठोतर सौ पख साखा सही, शाला है गौलोक।
सद्गुरु चरण को क्षेत्र है, जहाँ जाय सब शोक।।४।।

सुख विलास मांहे नित्य बृन्दावन, ऋषिमहाविष्णु है जोय।
वेद हमारो स्वसम है तीरथ जमुना सोय।।५।।

सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुध जाग्रत को ज्ञान।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रवान।।६।।

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।
निजानन्द है सम्प्रदाय, ये उत्तर प्रश्न प्रकास।।७।।

श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा यह।
तिनथें हम यह लखी है, द्वार पावें अब तेह।।८।।

श्री राजजी के पूजन में निम्नलिखित चौपाईयां और श्लोक बोलें-

बन्दो सदगुरु चरण को, करूं सो प्रेम प्रणाम।
अशुभ हरण मंगल करण, धनी श्री देवचन्द्र जी नाम।।

Nijanand App

श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहराज सुनाम।
तेज कुंवरि स्यामा युगल, पल पल करुं प्रणाम।।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छुड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।।

इन पांऊ तले पड़ी रहीं, धनी नजर खोलो बातून।
पल न बालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन।।

आनन्द कन्दं श्री देवचन्द्र ब्रजेश रूपेण पुरापिजातम प्रविश्य प्राप्तं प्रियं प्राणनाथं, परेश पूर्णं सततं नमामि

ब्रह्मप्रिया जागरणाय जातः सर्वस्व पाता भवसिन्धु त्राता।
विज्ञान दाता निजधर्म धाता सख्येक प्रियतम् शरणं प्रपद्ये।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिरूपम्।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सदगुरुं तं नमामि।।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

संस्कारों की क्रिया-विधि

१. गर्भाधान संस्कार

इस संस्कार को करने से पूर्व माता पिता को कम से कम १ बार या ५ बार मेहर सागर का पाठ अवश्य करना चाहिये। क्योंकि यदि माता-पिता अपने मन की पवित्र स्थिति में यह संस्कार करते हैं तभी गर्भ में आने वाला जीव भी उत्तम संस्कारों से युक्त होगा।

गर्भ में बालक की स्थिति हो जाने के पश्चात् नियमित रूप से माता श्री मुख वाणी का पलन, मेहर-सागर का पाठ तथा सेवा-पूजा करें, क्योंकि गर्भस्थ बालक में भी इन सभी संस्कारों का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। ऐसे समय में किसी की निन्दा, विवाद, आदि न करें तथा सिनेमा आदि भी न देखें। रात्रि को सोते समय मूल-मिलावे एवं रंग परवाली मन्दिर का ध्यान अवश्य करें।

२. पुंसवन संस्कार

गर्भ स्थिति के दूसरे या तीसरे माह में यह संस्कार किया जाता है जिससे पति-पत्नी के शरीर में शक्ति का ह्रास न होवे। प्रथम दिन श्रीराजजी की आरती पूजन करें और मेहर सागर का पाठ करें। वह क्रोध, लोभ, ईर्ष्या-द्वेष आदि दोषों में न फंसे तथा नियमित रूप से वाणी का पाठन एवं सेवा पूजा किया करें।

३. सीमन्तोन्नयन संस्कार

गर्भ स्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में यह संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार का उद्देश्य यह है कि गर्भ धारण करने वाली स्त्री का मन सन्तुष्ट रहे, उसे कोई रोग न हो तथा गर्भ भी अच्छी स्थिति में रहे।

इस संस्कार को मनाने के दिन गर्भ वाली स्त्री के हाथ से आरती-पूजन

Nijanand App

एवं भोग लगाने की क्रिया की जाय। अन्य बुजुर्ग महिला सुन्दरसाथ उसके प्रति शुभकामना रखें एवं आशीर्वाद देवें।

४. जातकर्म संस्कार

यह संस्कार बालक के जन्म होने के समय किया जाता है। जब बालक के जन्म होने का समय निकट हो तो इस चौपाई को पढ़कर स्त्री के शरीर पर जल छिड़कें।

पाक ना होइए इन पानिए, चाहिए अर्स का जल।
नहाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल।।

जब बालक का जन्म हो जाय, तब उसके शरीर को पूर्णरूप से स्वच्छ करके उसके दक्षिण कान में 'श्री जी साहब' कहें।

इसके पश्चात् श्री राजजी का आरती-पूजन करें। भोग लगायें एवं प्रसाद बांटे। तथा मेहर सागर का पाठ कम से कम १० दिनों तक अवश्य करें।

वर्तमान समय में बालकों के जन्म के समय जन्म-कुंडली बनवाने की अंध परम्परा है। ऐसा करना अज्ञानता के ही कारण है और जन्म-पत्री बनाना वेद-शास्त्र के विपरीत है। इसी प्रकार सूतक के नाम से घर के लोगों को अशुद्ध समझना भी बहुत बड़ी भूल है। यह आवश्यक है कि बालक के जन्म लेने पर सम्पूर्ण घर को साफ सुथरा रखा जाय तथा घर में ही भजन, कीर्तन, पाठ आदि का आयोजन अवश्य किया जाय।

५. नामकरण संस्कार

बालक के जन्म के ११वें दिन या १०१ वें दिन या अगले वर्ष जन्म के दिन बालक का नामकरण संस्कार होना चाहिए। जहां पर स्वरूप साहब पधराये गये हों, वहां पर या प्राणनाथ जी मंदिर में भजन, कीर्तन करके आरती करें। पुनः परिक्रमा, स्वरूप बोलकर भोग लगायें। तारतम पढ़कर स्वरूप साहब खोलें।

दायीं पृष्ठ की प्रथम पंक्ति के प्रथम शब्द के प्रथम अक्षर पर बालक का नाम रखा जाय। तत्पश्चात् प्रसाद का वितरण किया जाय। राशि या नक्षत्र के आधार पर कदापि बालक का नाम न रखा जाय, क्योंकि यह परम्परा मध्य काल में ही चली है, वेद-शास्त्र में ऐसा करने का कोई उल्लेख नहीं है।

६. निष्क्रमण संस्कार (टहलाना)

बालक को शुद्ध वायु में भ्रमण कराना निष्क्रमण संस्कार कहलाता है। बालक के जन्म के तीसरे या चौथे माह में यह संस्कार कराना चाहिए संस्कार के दिन बालक को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहनायें। बालक के माता या पिता उसे अपनी गोद में लेकर घुमाये तथा साथ ही साथ मन में इन चौपाइयों का भी उच्चारण करे-

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी, बिना नहीं होई और।।

रेत सेत जमुना जी तलाब, कई ठौर बन करें विलास।
इस्क के सारे अंग भीगल रेहेस रंग विनोद कई हांस।।

चौदे लोक में झूठ विस्तरयो, तामे एक सांचे किए तुम।
हंसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां खसम।।

अब छल में कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम।
सुरत धनी सों बांध के, चलि लें विरहा रस प्रेम काम।।

७. अन्न प्राशन संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार तभी करना चाहिए, जब बालक में अन्न पचाने की

Nijanand App

शक्ति आ जाय। बालक के छटे महीने में अन्न प्राशन संस्कार करना चाहिए। जिस दिन बालक का जन्म हुआ हो उसी दिन यह संस्कार करना चाहिए।

सर्वप्रथम श्री राजजी का पूजन एवं आरती करके भोग लगावें तथा प्रसाद को थोड़ा-थोड़ा बालक के मुख में खिलावें। वहां उपस्थित सभी सुन्दरसाथ बालक को शुभाशीष देवें।

८. चूड़ाकर्म (मुंडन) संस्कार

बालक के जन्म के पहले या तीसरे वर्ष में यह संस्कार किया जाता है अपने गांव, नगर के मन्दिर में या निजगृह के मन्दिर में यह संस्कार करवाना चाहिए। शीतोष्ण जल से बालक के बालों को भिगोकर काटना चाहिए। तत्पश्चात् बालक के सिर पर मक्खन या मलाई लगाकर स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र धारण कराना चाहिए। इसके बाद श्री राज श्यामा जी का पूजन, आरती, परिक्रमा भोग आदि की क्रिया करनी चाहिए और सबको प्रसाद वितरित करना चाहिए। वहां उपस्थित सभी सुन्दरसाथ बालक को शुभाशीष देवें।

९. कर्णवेध संस्कार

यह संस्कार बालक के जन्म के तीसरे या पांचवे वर्ष की अवस्था में किया जाता है। जिस दिन बालक या बालिका की नासिका या कान के छेदन का संस्कार करना हो उस दिन प्रातःकाल बालिका या बालक को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र धारण करावें। उसको आसन पर बैठाकर श्री मुख वाणी के अंश या भजन का गायन किया जाय। चिकित्सा के कार्य में निपुण उत्तम वैद्यों द्वारा नासिका या कान का छेदन कराकर उसमें औषधि भर देनी चाहिए, जिससे वह पके नहीं।

१०. उपनयन संस्कार

उपनयन संस्कार का अर्थ यज्ञोपवतीत संस्कार से है। वस्तुतः यह प्रतिज्ञा सूत्र है, जिसको धारण करने वाला बालक श्री राजजी के सामने यह प्रतिज्ञा करे

कि मैं ब्रह्मचर्य पूर्वक सभी ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करके तीनों ऋणों (मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं आचार्य के ऋण) को पूर्ण करूंगा तथा ज्ञान, कर्म और उपासना से गुजरते हुए विज्ञान (मारफत) की अवस्था को प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास करूंगा। सुन्दरसाथ में यज्ञोपवीत पहनने का प्रचलन सर्वत्र नहीं है। जो इसे पहनाना चाहते हैं, वे बालक को उपनयन संस्कार के दिन स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर उससे श्री राजजी की आरती करवायें। तत्पश्चात् परिकरमा व भोग बोलकर बालक से यह प्रतिज्ञा करवायें कि वह ब्रह्मचर्य धारण कर सम्पूर्ण श्री कुलजम स्वरूप श्री बीतक साहब, चर्चनी तथा अन्य धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन करेगा। अन्त में प्रसाद वितरित करें। उपस्थित सुन्दरसाथ बालक को शुभाशीष देवें।

११. ज्ञानारम्भ (शिक्षा) संस्कार

जो दिन उपनयन संस्कार का है, वही दिन ज्ञानारम्भ संस्कार का है। यदि उस दिन न हो सके, तो दूसरे दिन या एक वर्ष के भीतर किसी भी दिन करे। यह संस्कार घर, आश्रम, मन्दिर या किसी धार्मिक शिक्षा संस्थान में किया जा सकता है।

सर्व प्रथम बालक को इन वस्तुओं के निषेध का उपदेश दिया जाय। मांस, मछली आदि तमोगुणी भोजन का निषेध शराब, तम्बाकू या अन्य सभी प्रकार के नशे का त्याग। चोरी न करना झूठ न बोलना।

इसके अतिरिक्त बालक को ब्रह्मचर्य सम्बन्धी अन्य सिखापन भी दी जाय, जिसमें खट्टे, तीखे एवं उत्तेजक पदार्थों को न खाने एवं कुसंगति और कुचेष्टा से दूर रहने का उपदेश हो। इसके पश्चात् ५ बार तारतम का पाठ करके श्री मुखवाणी या श्री बीतक साहिब का शिक्षण प्रारम्भ किया जाय।

१२. समावर्तन संस्कार

२४ या ३० वर्ष की उम्र तक ब्रह्मचर्य पूर्वक श्री मुखवाणी, श्री बीतक साहिब चर्चनी एवं अन्य धर्म ग्रन्थों की शिक्षा प्राप्त करके जब बालक अपने घर

Nijanand App

इस उद्देश्य से आये कि विवाह करके गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना है तो उस समय जो संस्कार किया जाता है, उसे सतावर्तन संस्कार कहते हैं।

अध्ययनपूर्ण कर घर आने वाले युवा पुरुष को स्नान, वस्त्र, आभूषण आदि से सुशोभित करके मेहर सागर का प्रेमपूर्वक पाठ करना चाहिए तथा जिन विद्वान, महात्मा या गुरुजन से बालक ने ज्ञान ग्रहण किया हो, उन्हें घर पर आमन्त्रित करके भोजन, भेंट सेवा आदि से प्रसन्न कर उनके प्रति आभार प्रगट करना चाहिए।

१३. विवाह संस्कार

भारतीय संस्कृति में आठ प्रकार के विवाह माने जाते हैं।

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पिशाच। ये आठ प्रकार के विवाह माने जाते हैं।

सार्वकालमेके विवाहम्। आ० गृ ०१/४/१/२

अर्थात् किसी भी ऋतु या मौसम में अपनी सुविधानुसार विवाह किया जा सकता है। २५ वर्ष से पूर्व पुरुष और १६ वर्ष से पूर्व कन्या का विवाह भूलकर भी न करें।

सगाई

किसी मन्दिर में या पवित्र स्थान पर श्री राजजी की सेवा पधराकर पहले ये दो चौपाइयां बोले। १. बन्दों सदगुरु, २. श्री प्राणनाथ निज। फिर आनन्द मंगल बोलकर लड़की के पिता लड़के को चन्दन लगावें तथा फूलों की माला पहनाकर एक डिब्बा मिठाई का देवें तथा अपने भावानुसार भेंट भी दें। तत्पश्चात् श्री राजजी का प्रसाद लड़के को खिला देवें।

मुकुट (मौर) बांधना

एक थाली में चन्दन एवं केशर से श्री बनाकर युगल स्वरूप श्री राज

श्यामा जी का स्मरण कर, पूजन करें एवं तारतम का पाठ करके वर को तिलक लगा कर मुकुट बांधना चाहिए।

घोड़ी चढ़ना

बन्दो सतगुरु चरण कों, ...और
श्री प्राणनाथ निज मूल पति..................

बोलकर आनन्द मगंल बोले और वर को घोड़ी पर चढ़ा देवें।

बारात प्रस्थान

बारातियों की संख्या सीमित होनी चाहिए उसमें किसी प्रकार के नशे का प्रयोग बहुत बड़ा पाप है।

समधी मिलन

जब बारात लड़की वाले के घर पहुंच जाए तो शादी पढ़ने वाले सबसे पहले आनन्द मंगल बोले तत्पश्चात श्री प्राणनाथ जी का जयकारा बोल कर ये चौपाई बोले

१. बन्दौ सद्गुरु ....।

२. श्री प्राणनाथ निज मूल पति............।

तुम आए सब आइया, दुःख गया सब दूर।
श्री महामति इन सुख की क्या कहूँ, जो उदया मूल अकूंर।।

यह बोलकर जयकारा बोले, और फूल मालाओं से मिलन करा दें। फिर लड़के को घोड़ी से उतरवा लें और भोजन ग्रहण करे।

पाणि-ग्रहण

श्री राजजी की सेवा एक तख्त पर सुन्दर ढंग से पधरावें और मंडप को

Nijanand App

फूलों से खूब सजावें। उसमें इत्र आदि सुगन्धित पदार्थों को छिड़कें। तख्त के आगे चौकी पर थाली में दो आरतियां सजावें। थाली में चन्दन, पुष्प और चावल रख देवें। वर और वधू के बैठने के लिये दो आसन भी लगायें।

भोजन के पश्चात लड़का हाथ पांव धोकर श्री राजजी को प्रणाम कर अपनी दाहिनी तरफ का आसन छोड़कर बैठ जाए। और तब तक भजन कीरतन करते रहे जब तक लड़की तैयार होकर न आ जाए। लड़की श्री राजजी को प्रणाम कर लड़के के दायीं तरफ के खाली आसन पर बैठ जाए। भजन किरतन के बाद विवाह पढ़ें, सर्वप्रथम लड़की के माता पिता श्री राजजी महाराज जी के पूजन के लिए प्रणाम कर सामने खड़े होकर ये चौ० बोलें।

श्री चन्दन पुष्प बहु विध राजें।
सुगन्ध सर्वे मारा बाला जी ने छाजे।।

श्री पिया जी ने पूजन इन विध कीजे।
श्री राज श्यामा जी ना पूजन इस विध कीजे।।

श्री सुन्दरसाथ जीना पूजन इन विध कीजें।
फेर फेर मूल स्वरूप चित में लीजे।।

जो कोई वासना इन घर, मूल स्वरूप से न काढ़े नजर।
नहीं कोई सुख इन समान, अंगना तों कोट बेर कुरबान।।

इस प्रकार कन्या के माता पिता चन्दन चढ़ावे। इसके पश्चात पुजारी जी बोलें

तन मन धन सब अर्पण करुं, तुम पर हे श्री राज।
मन भावें सोई करों, हाथ तुम्हारे लाज।।

इसके पश्चात श्री प्राणनाथ प्यारे की जय बोल कर पुष्प व चावल चढ़ा दें इसी प्रकार लड़की के माता पिता भी श्री राजजी महाराज का पूजन करें।

इसके पश्चात पूर्व में वर्णित शास्त्रीय पद्धति के श्लोक भी गायें जायें।

तत्पश्चात इन चौपाइयों का गान हों।

कर प्रणाम लागू चरणें, करुं सेवा प्यार अति घने।
करुं दण्डवत जीव के मन, देउ प्रदाक्षिणा रात ने दिन।।

कृपा करत हो साथ पर बड़ी, भी अधिक कीजो घडी घडी।
इन्द्रावती पाँव परत आधार, धनी धाम के लई मेरी सार।।

कन्या अर्पण

अब लड़की के माता पिता फूल की पंखुड़ियाँ ले कर लड़की के दोनो हाथों में भर दें और लड़की के दोनों हाथों को पकड़ कर लड़के के हाथों पर रख दें और चौपाई बोलें।

दो पुष्प लेकर हाथ में, करुं कन्या अर्पण आज।
विनती ये स्वीकार जो, बांह ग्रहे की लाज।।

लड़का फूलों को लेते हुए कहे कि स्वीकार है अब पुजारी जी महाराज लड़के के पालव में फूल बांध देवें। और वह पालव लड़की के कपड़े से बांधे और यह चौपाई बोले-

मैं जो आई ब्याहन दुल्हे को, दुल्हा आए मुझ कारन।
बांधे पालव सों पालव, पाट बैठे दुल्हा दुल्हिन।।

अब वर अपनी वधू से कहता है-

तू उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पिया के संग।
वह आए मिलेंगे आप ही, जासों तेरा सनमंध।।

Nijanand App

संगी तेरे तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं क्यों न करे रे करार।
श्री महामति मन तूं दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार।।

यह सुनकर लड़की वचन मांगती है।

मांगत हूं मेरे दुल्हा, मन कर कर्म वचन।
ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करुं।।

लड़का वचन देते हुए हां करता है-

लड़की फिर मांगती है-

मेरे धनी तुम्हारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप।
इस्क दीजे मोहे अपनो, मैं तासों करुं मिलाप।।

ना चाहूं मैं बुजरकी, ना चाहूं खिताब खुदाए।
इस्क दीजे मोहे अपनो, मेरा याही सो मुद्दाए।।

सतगुरु मेरे स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याहीं सो, मैं तार्थे सदा सुख लहूं।।

इसके पश्चात् छोटी अर्जी का गायन किया जाय।

निसदिन ग्रहिए प्रेम सों श्री जुगल स्वरूप के चरन।
निरमल होना याही सों और धाम वरनन।।१।।

इन विध नरक से छूटिए, और उपाय कोई नाहें।
भजन विना सब नरक है पचि पचि मरिए माहें।।२।।

एक आत्म धनी पहचानिए निर्मल एही उपास।
श्री महामत कहे समझ धनी को ग्रहीए सो प्रेमें पाए।।३।।

श्री महामत कहे महबूब जी अब दीजो पर उडाए।
नैना खोल के अंक भर लीजे दुल्हा कन्ठ लगाए।।४।।

गुण अवगुण जेते किये किए जो पछिले जौन।
साहब सों सांचा रहे साथी सांचा तौन।।५।।

अवगुण काढे गुण ग्रहे, हारे से होए जीत।
साहेब से सनमुख सदा ब्रह्मसृष्टि ए रीत।।६।।

ए सुख सब्दातीत के क्यों कर आवे जुवान बालें से।
बुढापे लग मेरे सिर पर खडे सुभान।।७।।

नजर से न काढी मुझे, अव्वल से आज दिन।
क्यों कर कहूं मेहेर महबूब की, जो करत ऊपर मोमन।।८।।

कोइ देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियोतिन।
सरत धाम की न छोडियों, सुरत पीछे पिराओ जिन।।९।।

श्री महामति कहे पीछा ना देखिए, ना किसी की परवाह।
एक धाम हिरदे में लेय के उडाय दीजे अरवाह।।१०।।

श्री महामति कहे अरवाहे अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरुप के चरण लेय के, चलिए अपने घर।।११।।

हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा पिया जी क्या चले, ज्यो जानों त्यों करो खसम।।१२।।

तुम तुमारे गुण ना छोडे, मैं तो करी बहुतदुष्टाई।
मै तो कर्म किये अति नीचे, पर तुमही राखी मूल सगाई।।१३।।

Nijanand App

जानों तो राजी राखो जानों तो दलगीर।
या पाक करो हादी पना, या बैठाओ माहें तकसीर।।१४।।

पिया जी तुम हो तैसी कीजियो, मैं अर्ज करुँ मेरे पिऊ जी।
हम जैसी तुम जिन करो मेरा, तलफ तलफ जाए जीऊ जी।।१५।।

जीवरा तो जीवे नहीं क्यों मीठे दिल की प्यास जी।
तुम बिना मैं किनसों कहूँ तुम हो मेरी आस जी।।१६।।

आस विरानी तो करुं, जो कोई दूसरा होये जी।
सब विध पिया जी समरथ, दिन रैन जात रोए रोय जी।।१७।।

जन्म अन्धी जो मैं हुती, सो क्यों देखू नीके कर जी।
जब तुम आप देखाआगे, तब देखूगी नैन नजर जी।।१८।।

ए पुकार पिया जी मेरी सुन के ढील करो अब जिन जी।
खिन खिन खबर लीजिए, मैं अर्ज करुं दुलहिन न जी।।१९।।

एती अर्ज मैं तो करुं, जो आडी भई अन्तराए जी।
सो आडी अन्तराए टालि के, दुलहा लीजे कंठ लगाए जी।।२०।।

कंठ लगाइये कंठ सों, पिया जी कीजे हांस विलास जी।
वारणे जाए श्री इन्द्रावती, पिया जी राखो कदमों पास जी।।२१।।

तुम दुलहा मैं दुलहिन, और न जानो बात जी।
इस्क सों सेवा करुं, सब अंगों साख्यात जी।।२२।।

सदा सुख दाता धाम धनी मैं, कहा कहूँ किन सों बात जी।
श्री महामति जुगल सरुप पर, वारी अंगना बलि बलि जात जी।।२३।।

अब वर वधू दोनों मिलकर श्री राजजी की आरती व पूजन करेंगे। सर्व प्रथम वे

'पूर्ण ब्रह्म से न्यारे' गाया जाय। तत्पश्चात् चन्दन चढ़ावनी की जाय। इसके बाद दोनों आरती करें। अब परिक्रमा करनी है। जिस कपड़े से पालव बंधे हैं, लड़का उसे लेकर आगे चले और लड़की दूसरा किनारा पकड़कर पीछे-पीछे चलते हुए तख्त पर पधराये हुए 'स्वरूप साहब' के चारों ओर परिक्रमा बोलते हुए अपने स्थान पर आवें। तीन परिक्रमा में तीन बार लड़का आगे चलेगा। तीसरी परिक्रमा में दोनों स्थान बदल देवें। अब वधू बायें अंग खड़ी होगी और वर दायें अंग में खड़ा होगा। चौथी परिक्रमा में लड़की आगे चले और लड़का पीछे। ये चारों परिक्रमा इस प्रकार क्रमशः बोलें-

१. जुगल स्वरूप रूप छवि छाजे.......।

२. धाम धनी श्री राज हमारे........।

३. मूल स्वरूप किशोर किशारी....।

४. प्रथम भोम शोभा अति भारी...।

परिक्रमा के पश्चात् पुजारी जी स्वरूप पढ़े-स्वरूप सुन्दर सनकुल सकोमल....।

वरमाला

इष्ट के सामने पाणिग्रहण हो जाने के पश्चात् ही वरमाला होनी चाहिए, दरवाजे पर नहीं।

वर और वधू एक दूसरे को माला पहनावें तथा उपस्थित अन्य सभी सुन्दरसाथ अपने आशीर्वाद रूपी फूल उन दोनों पर बरसावें।

इसके पश्चात् भोग लगाकर किरंतन ग्रन्थ प्रकरण ५५ से प्रारम्भ की दस चौपाइयां पढ़ें।

आए अगम वाणी इत मिली, विश्व मुख करत बखान।
कौल सवन के पूरन भऐ, आए सो पोहोंचे निसान।।१।।

Nijanand App

चेत सवे सत वादियो, सुनियो सो सतगुर मुख बान।
धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रगटीया परवान।।२।।

आगमी सब खडे हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप।
आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत।।३।।

पहले मण्डल में मागी मुझें, सो आए ब्याहे इत।
कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत।।४।।

मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन।
बाँधे पालव सों पालव, पाट बैठ दुलहा दुलहिन।।५।।

सत पर सत दोऊ पर्वत, तोरन बाँधे हैं बन्ध।
विन थलिए विवाह हुआ, हाथों हाथ जोडे मूल सनमन्ध।।६।।

मण्डल अंखण में भाडवो, चौरी भम रोये है चार।
सो थम थापे थिर कर, कहू सो तिनको प्रकार।।७।।

एक ब्रज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराठ।
चारों थमों चौरी रची, रच्यो सो नहचल ठाठ।।८।।

एक बेर एक मांडते मौर बाँधियो सीस।
त्याही बारह हजार को, और हजार चौबीस।।९।।

तीन फेरे दुलहे पीछे फिरे, चौथी फेर आगल भई।
अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि है सही।।१०।।

आनन्द मंगल बोलकर मुकुट उतार देवें तथा सबको बधाई देकर प्रसाद बाटें।

१४. गृहस्थाश्रम संस्कार

इस प्रकार के संस्कार के लिये कोई शुभ दिन निश्चित करके पति-पत्नी

इस बात की प्रतिज्ञा करें कि वे संसार में रहते हुए सांसारिक कार्यों को करते हुए नियमित रूप से श्री मुख बाणी का पाठ सेवा पूजा तथा परमधाम के पच्चीस पक्षों की चितवनी करेंगे। गृहस्थाश्रम में रहने वाले सुन्दर साथ को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे केवल शरीर से ही स्त्री पुरुष हैं। उन दोनों के अखंड धनी अनादि अक्षरातीत श्री राजजी हैं। उनसे अपना आत्मिक सम्बन्ध कभी भी भूले नहीं।

१५. वानप्रस्थ संस्कार

यह संस्कार ५० वर्ष की आयु के पश्चात् किया जाता है। जब सिर के बाल सफेद हो जाय तथा पुत्र के भी पुत्र हो जाय, तब यह संस्कार धारण करना चाहिए। यह संस्कार परब्रह्म की प्रेम लक्षणा भक्ति करने तथा ज्ञान के संचय करके उसके प्रचार प्रसार हेतु धारण किया जाता है। इस संस्कार को धारण करने वाला सुन्दरसाथ श्री राजजी का विधिवत् चन्दन, पुष्प अर्पित करके पूजन करें। पूर्ण ब्रह्म बोल करके आरती, परिक्रमा करे, स्वरूप बोलकर भोग लगावे तथा चरणामृत प्रसाद ग्रहण करके सबको प्रसाद बांटे। यह संस्कार किसी पुज्य गुरुजन या विरक्त ज्ञानी के ही निर्देशन में होना चाहिए। इस संस्कार के पश्चात् वानप्रस्थी अपने घर का परित्याग करके किसी एकान्त स्थान या आश्रम में वास करके निरन्तर धनी का ही चिन्तन करे।

१६. सन्यास संस्कार

वानप्रस्थ आश्रम की समाप्ती (लगभग ६० या ७५ वर्ष की आयु के पश्चात) सन्यास आश्रम धारण किया जाता है। पूर्ण वैराग्य हो जाने पर ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ती के बाद भी सीधे यह सन्यास का संस्कार किया जाता है। सम्पूर्ण संसार की मोह माया से अलग होकर धनी की बाणी का प्रचार प्रसार करने और परमधाम के पच्चीस पक्ष की चितवनी करने के लिए यह सन्यास आश्रम धारण किया जाता है। यह संस्कार किसी विरक्त गुरुजन के निर्देशन में ही किया जाता है। सर्वप्रथम मेहर सागर का पाँच बार पाठ करके तथा आत्मिक

Nijanand App

रहनी का उपदेश करके विरक्त गुरुजन के द्वारा ब्रह्मचारी या वानप्रस्थी को निर्गुणी भेष सफेद वस्त्र दे दिये जाएं।

अन्त्येष्टि कर्म

सुन्दरसाथ के धाम गमन के समय मूल मिलावे का ध्यान करना चाहिए ताकि उसकी सुरता धनी के चरणों में ही लगी रहे।

धाम गमन होने वाले सुन्दर साथ को नहला धोलाकर स्वच्छ वस्त्र पहनायें इसके पश्चात पाँच बार तारतम का पाठ करें उसके पश्चात चन्दन लगाकर उसके शरीर पर चरणामृत छिड़कें, अर्थी ले जाते समय श्री राज श्यामा जी सत्य है, बोलते हुए इस किरंतन का पाठ करें।

खिन एक लेहूँ लटक भंजाएँ, टेक।
जनमत ही तेरो अंग झूठो देखत ही मिट जाए।।१।।

रे जीव निमख के नाटक में, तूँ रह्यो क्यों विलमाय।
देखत ही तेरी जात बाजी, मूलत क्यों प्रभू पाए।।२।।

आपको प्रथी पति कहावे, एसे केते जाए बजाए।
अमर पुर सिरदार कहिए, काल न छोडत ताए।।३।।

जीव रे चतुर मुख को छोडत नाहीं, जो करता सृष्टि कहलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पहुचों आय।।४।।

पवन पानी आकाश जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर एसो जान के तूप्राण पति लव लाए।।५।।

देखन को यह खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
श्री महामत रुदे रमें तासों, उपजत जाकी इच्छाए।।६।।

श्मशान घाट में पहुँच कर चिता के पास अर्थी रखकर अगरबत्ती एवं धूप

जलायें तथा यह चौपाई पढ़ें।

निस दिन ग्रहिए प्रेम सों, श्री युगल स्वरूप के चरन।
निरमल होना याहीं सों, और धाम बरनन।।

इन विध नरक से छुटिए, और न कोई उपाय।
भजन बिना सब नरक है, पचि पचि मरिए मांहि।।

फिर सभी मिलकर पांच बार तारतम का पाठ करें तथा चिता पर अर्थी को रखकर बड़े लड़के से अग्नि प्रज्वलित करायें। चिता में घी आदि सुगन्धित पदार्थ डाल देवें। पुनः स्नान करके अपने घर पधारें। दाह क्रिया के चौथे दिन पुजारी जी या अन्य किसी सुन्दरसाथ को साथ लेकर वहां जहां जावें तथा फूल चुनकर धोकर कपड़े में बांध लेवें। उसे अपनी श्रद्धानुसार किसी पवित्र स्थान में पहुँचावें। स्नान करके घर में श्री कुलजम स्वरूप साहिब जी का अखण्ड या साप्ताहिक पाठ रख देवें।

अन्तिम क्रिया

ग्यारहवें दिन अन्तिम क्रिया के समय श्री राजजी महाराज की सेवा तख्त पर या पालकी में पधरावें। एक बार मेहर सागर का पाठ तथा पांच बार तारतम का पाठ करें। फिर किरंतन के प्रकरण ३५ 'रे जीव जी, तुमे दाझ लगी, मुझ बिछुड़ते' का पाठ करके साप्ताहिक पारायण का समाप्ति पूजन करें। पूर्ण ब्रह्म बोलकर आरती करें। पुनः परिक्रमा बोलकर स्वरूप पढ़कर भोग लगावें और आनन्द मंगल बोलकर (प्रायः बड़े पुत्र को) आनन्द मंगल बोलकर पगड़ी बंधाकर तिलक लगायें एवं प्रसाद बंटवायें।

मुहुर्त विधि

शुभ मुहुर्त निकालने के लिये पंचांग का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इस पंचाग के कारण ही बाबर एवं महमूद गजनवी के हाथों देश को पराजय का

Nijanand App

कष्ट झेलना पड़ा। बल्कि १ बार तारतम पढ़कर स्वरूप साहब को खोलना चाहिए। दाहिनी तरफ के पृष्ट पर जो अंक होता है, उसी तारीख को अपना शुभ दिन माने। यदि प्रथम अंक उचित न लगे तो दो अंको को मिलाकर या जोड़कर तिथि निश्चित करें या तीन अंकों को जोड़कर तिथि निर्धारित कर लेवें। जैसे यदि पृ० सं० १४१५ होता है, तो शुभ तिथि होगी- ५, १५, ६ या १०

गृह प्रवेश

नये गृह में प्रवेश हेतु श्री राजजी का अखण्ड या साप्ताहिक पारायण रखें। समाप्ति पूजन के समय श्री राजजी का चंदन, पुष्प से पूजन करके आरती, परिक्रमा, करके स्वरूप बोलें तथा भोग लगायें एवं सर्व सुन्दर साथ में बांट देवें। उस दिन पड़ोस के सुन्दरसाथ को प्रीति भोज भी देवें।

दुकान या फैक्ट्री का मुहूर्त

जब नई दुकान बनावें या नया काम शुरु करें तो वहां सफाई इत्यादि कराकर श्री राजजी की सेवा पधरावें। मुहुर्त वाले दिन 'वन्दो सदुगुरु' बोलकर ये चौपाइयां बोलें-

भोम भली भरत खंड की, जहां आई निध नेहेचेल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल माहे जल।।

इस बोए बिरिख होत है, ताको फल पावें सब कोय।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।।

आनन्द मंगल बोलकर उनकी बही खाता में 'श्री राज श्यामा जी' लिखकर चंदन पुष्प चढ़ा कर यह लिख दे-

बन्दों सदगुरु चरण कों, करुं सो प्रेम प्रणाम।
अशुभ हरण मंगलकरण, श्री देवचन्द्र जी नाम।।

श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहराज सुनाम।
तेज कुंवरि श्यामा युगल, पल पल करुं प्रणाम।।

आज दिन............को मेसर्स........... की दुकान का शुभ मुहुर्त हुआ 'इति शुभम्'। श्री राज श्यामा जी सहाय।

रोग आदि के कष्ट से निवृत्ति

सर्वप्रथम किसी खाद्य पदार्थ दूध या मिठाई आदि को साफ बर्तन में रखकर युगल स्वरूप का ध्यान करें तथा ५ बार तारतम का पाठ करें। उसके पश्चात् इन दोनों मन्त्रों का भी पांच बार पाठ करें।

१. चंपत के लाल तूं, महाबली छत्रसाल तूं, आयी बला को टाल तूं।

२. आओ शक्ति श्री श्यामा महारानी सदा सत सुख दायिनी।।

तत्पश्चात् उस भोज्य सामग्री को रोगी को खिला देवें। यह कार्य नियमित रूप से शाम सुबह श्रद्धा भाव से किया करें।

अत्यधिक कष्ट की स्थिति में किरंतन के ६ प्रकरणों (३५ से ४०) का सुर्योदय से पूर्व नियमित रूप से श्रद्धा पूर्वक ४० दिन तक पाठ करें। धाम धनी की कृपा से कष्ट से अवश्य ही निवृत्ति हो जायेगी।

नोट- संस्कार विधि में प्रयुक्त होने वाली आरती, भोग, परिक्रमा आदि सभी आगे लिखे गये हैं।

Nijanand App

Nijanand App

परिक्रमा

जुगल स्वरूप रूप छवि छाजे,
सिंहासन के ऊपर विराजे।।१।।

नाचत देत फिर आवत फेरी,
हँसि-हँसि लालन मुखतन हेरी।।२।।

गावतगीत बजावत बाजे,
जमुना त्रट पंखी धुनि गाजे।।३।।

फूले फूल फूल लइ आवें,
गुहि गुहि हार पिया जी को पहिरावें।।४।।

देत परिक्रमा कर्म सब छूटे,
यह सुख पंचम निसदिन लूटे।।५।।

सोमवार

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द रूप,
संग श्यामा जी सोहे अनूप।।१।।

चारों चरन सुन्दर सुख दाई,
भूखन की शोभा मुख वरनी न जाई।।२।।

झांझरी घुंघरी कांबी कड़ला लेखे,
अनवट बिछुवा श्री श्यामा जी विसेखे।।३।।

नीलो है चरणिया केसरी इजार,
स्वेत दावन झांई करे झलकार।।४।।

चोली स्याम जड़ाव साड़ी सेंदुरिया रंगराजे,
हैयड़े पर हार शोभा अधिक विराजे।।५।।

जरी जामा श्वेत जड़ाव अंग सोहे,
नीलो-पीलो पटुका देखत मन मोहे।।६।।

जामे ऊपर चादर रंग आसमानी,
छेड़े किनार बेली जाय न बखानी।।७।।

जरी पाग सेंदुरिया जग मग जोत,
राखड़ी कलंगी कही जाय न उद्योत।।८।।

शब्दातीत पिया शोभा है अपार,
श्री महामति अंगला जाय बलिहार।।९।।

मंगलवार

धाम धनी श्री राज हमारे,
परम निधान परम रूप प्यारे।।१।।

महाराज मंगल रूप राजे,
श्याम श्यामा जी दोउ अनूप विराजे।।२।।

पूर्ण अक्षर पद से न्यारे,
सोइ जियावर धनी जी हमारे।।३।।

प्रगटे पिया निज अद्भुत सोई,
उपमा पार पावे नहिं कोई।।४।।

परमानन्द जोड़ी सुखकारी,
अंगना पिया पर वारी वारी वारी।।५।।

Nijanand App

बुधवार

परम सुभय आनन्द गुण गाइए,
नवल किशोर निरखि सुख पाइये।।१।।

धाम श्याम जिया मंगलकारी,
संग श्यामा जी दुलहिन पिया प्यारी।।२।।

कुंज-निकुंज मध्य क्रीड़त कोहे,
ललित मनोहर सुन्दर सोहे।।३।।

करत केलि यमुना तट नेरे,
परम विचित्र जियावर मेरे।।४।।

निज है स्वरूप रूप पिया राजे,
श्री महामति मदन कोटि छबि लाजे।।५।।

बृहस्पतिवार

धाम श्याम श्यामा संग प्यारी,
ब्रह्मानंद लीला निज न्यारी।।१।।

सात घट जमुना जल राजे,
झीलत युगल किशोर विराजे।।२।।

सघन कुंज मध्य चात्रिक बोलें,
क्रीड़त लाल लाड़िली डोले।।३।।

ताल पाल मध्य मोहोल सुहायें,
खेलन प्यारो प्यारी आवें।।४।।

लीला नित्य विहार स्वरूप पर,
भई श्री महामति कुरबान निरखि छबि।।५।।

शुक्रवार

प्रथम भोम शोभा अति भारी,
बैठे सिंहासन श्री युगल बिहारी।।१।।

सिंहासन कुचन मणि सोहे,
निरखि हरखि सखियां मन मोहे।।२।।

सखियां सर्वे शोभा अति सुन्दर,
चौंसठ थंभ तकियों के अन्दर।।३।।

वस्तर भूखन तेज अति जोर,
ता मध्य बैठे. श्री युगल किशोर।।४।।

युगल किशोर शोभा किन विध गाइये,
श्री महामति युगल पर वारी वारी जाइये।।५।।

शनिवार

मूल स्वरूप किशोर किशोरी,
निरखि सखी सच्चिदानन्द जोरी।।१।।

भेम तले की निरख छवे न्यारी,
सोहे सिंहासन प्यारो प्यारी।।२।।

श्वेत सेंदुर केसर आसमानी,
श्याम नीलों पीलो वस्तर जामी।।३।।

Nijanand App

देखत खेल सनमुख सखी सारी,
निरखि सिनगार शोभा अतिभारी।।४।।

ब्रह्मानंद लीला निज न्यारी,
निरखि श्री महामति नवरंग बारी।।५।।

सरुप

सरुप सुन्दर सनकूल सकोमल,
रुह देख नैना खोल नूर जमाल।।
फेर मेहेबूब जी आवत हिरदे,
किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।।१।।

जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगत सो,
चारों हारों अम्बर करे झलकार।।
जगमगे पाग जोत जवेर ज्यों,
मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार।।२।।

लाल अधुर हँसत मुख हरवटी,
नासिका तिलक निलवर भौंहें केश।।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना,
ए देख दर्शन आवे जोश आवेश।।३।।

बांहे चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक,
पोहोंची काड़ो कड़ी हस्त कमल मुंदरी।।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में,
ज्यों हक चलवन करत सब अंगुरी।।४।।

रोसनी पटुके करी अवकाश में,
चरन भूखन जामें इजार झांई।।
कहे श्री महामति मोमिन रुह दिल को,
मासूक खेंचे तोहे अर्स मांही।।५।।

भोग

नगल जड़ित चौकी पर दोऊ, श्री युगल स्वरूप विराजे।
धरो है थाल आगे हित चित सों, षटरस व्यंजन साजे।।१।।

जेंवत जुगल जोड़ी सुख पावत, अचवांऊ जल झारी।
लेत पान पावत हित चितसों, हिरदें सो हितकारी।।२।।

कोटि जतन ब्रह्मा कर थाके, सो जूठन नहिं पाये।
सो जूठन धनी सहज कृपा से, पंचम निशदिन पाये।।३।।

शास्त्रीय पद्धति के श्लोक

श्री मुखवाणी की रीति से संस्कार कराने पर भी कभी-कभी प्रसंगानुसार कुछ श्लोकों के उच्चारण की आवश्यकता महसूस की जाती है। संक्षेप में उनका उल्लेख इस प्रकार हैं-

आनन्दकन्दं श्री देवचन्द्र ब्रजेश रूपेण पुरापि जातम।
प्रविश्य प्राप्तं प्रिय प्राणनाथं परेशपूर्णं सततं नमामि।।१।।

ब्रह्मप्रिया जागरणाय जातः सर्वस्व पाता भव सिन्धु त्राता।
विज्ञानदाता निजधर्मधाता सख्येक प्रियतम् शरणं प्रपद्ये।।२।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वंदातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।।

Nijanand App

एकं नित्यं विमलचमलं सर्वदा साक्षिरूपम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुं तन्नमानि।।३।।

अद्वयं च द्वयाभासं स्वलीला अद्वैत वि ग्रहम्।
स्वरूपं सुन्दरं दिव्यं सानुकूलं सुकोमलं।।४।।

श्यामा शक्ति युक्तं नित्यं चिदानन्दधनं सदा।
धाम लीला समायुक्तं, भूषितांग मनोहरम्।।५।।

सर्व शोभा सम्पन्नं वैचित्य रस गर्भितम्।
सिंहासने समासीनं ध्याये ब्रह्म सनातनम्।।६।।

दर्शनात् तस्य रूपस्य स्वात्म शक्तिः विवर्धते।
हृदये तत्क्षणादेव भक्ति भावश्च द्योतते।।७।।

तस्य लीलामयं काव्यं दिव्यं रूपं ददाति वै।
प्रणीतं प्राणनाथेन ज्ञात्वा नैव अवसीदति।।८।।

आत्मानन्द लवो वापि यस्य चित्ते प्रकाशते।
नीयते क्षण मात्रेण निजानन्द महादधौ।।९।

निजात्म रूपं लाभेत च न जीर्यति न नश्यति।
प्राप्यते अखण्ड मुक्तिं निजानन्दं च विन्दति।।१०।।

मुक्ताकारं च सम्प्राप्य नित्यं क्रीडति सह ब्रह्मणा।
ज्ञात्वा स्वरूपमेतत् वै मुच्यते भव बन्धनात्।।

पूर्ण मदः पूर्णमिदं पूर्णत् पूर्णमुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यिते।।

Nijanand App